अध्यक्ष महोदय का संदेश

"हम एक छोटे से बीज के समान हैं जो दाने भर का होता है मगर भूमि को तोड़कर बाहर निकलता है, और फिर शक्तिशाली पेड़ बन जाता है. हमारे भीतर शक्ति का अपार भंडार छिपा हुआ है. प्रकृति ने हमें लचीलेपन का वरदान दिया है."

—कैथरीन डी व्राई

वित्तीय वर्ष 2021 के लिए हमारी वार्षिक रिपोर्ट इसके पहले की वार्षिक रिपोर्टों जैसी नहीं है क्योंकि इस वर्ष जैसा चुनौतीपूर्ण और कोई वर्ष नहीं था. ऐसा समय हममें से किसी ने नहीं देखा था. यह वर्ष इसलिए भी अभूतपूर्व था क्योंकि इसने हमें मनुष्य की अदम्य जिजीविषा और परिस्थितियों से जूझने की उसकी अपार क्षमता की झलक दिखाई. तो इसलिए, यह रिपोर्ट परिस्थितियों से मनुष्य के संघर्ष, पुनर्वास, बहाली, आविष्कार, परिष्कार और, हां... उसके लचीलेपन की रिपोर्ट है, यह एक ऐसा गुण है जो उसे कठिन से कठिन परिस्थितियों से लड़ने के जीवट, हौसले और आत्मविश्वास से भर देता है.

डॉ. जी.आर. चिंतला

कोविड महामारी की वजह से हमारा देश हाल में एक भीषण मानवीय आपदा से गुज़रा है. यह एक ऐसी त्रासदी थी जो हमारे अस्तित्व के इतिहास में अब तक किसी ने नहीं देखी थी. इसकी वजह से पूरे के पूरे परिवार खत्म हो गए, लाखों लोगों की रोज़ी-रोटी छिन गई और हमारी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ. परंतु ऐसी विकट और निराशाजनक परिस्थितियों में भी जनता के लचीलेपन, जीवट और अदम्य साहस की ही विजय हुई और सरकार के सतत, सुदृढ़ सहयोग से अंततः देश इस संकट से उबर कर खड़ा हो रहा है.

इस विभीषिका के बीच भी नाबार्ड अविचलित रहा और अपने दायित्वों का निर्वहन करता रहा. अपने ध्येय और उद्देश्यों के अनुरूप हमने अपने विभिन्न कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से कृषि और ग्रामीण विकास के संवर्धन और उसके लिए सहायता देने का कार्य जारी रखा और इसमें बड़ी कामयाबी हासिल की. वित्तीय वर्ष 2021 की वार्षिक रिपोर्ट मैं सहर्ष आपको सौंप रहा हूं जो ऐसे कठिन समय में भी हमारे उत्कृष्ट निष्पादन का साक्षात प्रमाण है.

किन्तु, आगे कुछ भी कहने से पहले मैं अपने स्टाफ सदस्यों के त्याग और उत्सर्ग के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिन्होंने इस महामारी का सामना करते हुए अपने प्रियजनों को खोकर भी हमारे ज़रूरतमन्द भागीदारों की सेवा की. इस घातक वायरस ने हमारे कुछ स्टाफ सदस्यों को भी हमसे छीन लिया है. मैं उनके शोक संतप्त परिवार जनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं और उन्हें वचन देता हूं कि उन्हें राहत पहुंचाने के लिए नाबार्ड हर संभव प्रयास करेगा.

नाबार्ड के उल्लेखनीय निष्पादन के पीछे कई कारण हैं. हमने बदलती परिस्थितियों के अनुकूल अपने उत्पादों और नीतियों में परिवर्तन किए; किसान, जो हमारे अंतिम ग्राहक हैं, उनकी जरूरतों का ख्याल रखा; नीतिगत निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार उच्चतम स्तरों से लगातार संपर्क बनाए रखा; अपनी परियोजनाओं को भारत सरकार के पुनरुद्धार पैकेज के अनुरूप ढाला और लॉकडाउन के कारण कार्य वातावरण में हुए परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को अपनाया.

मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 31 मार्च 2021 की स्थिति में नाबार्ड की बैलेंस शीट बढ़कर ₹6.57 लाख करोड़ तक पहुंच गई है जिसका आधार मुख्यतः सक्रिय (अर्जक) आस्तियां रहीं हैं जिनकी वजह से जमीनी स्तर पर निजी और सार्वजनिक निवेश संभव हो सके. हमारी कुल आस्तियों में वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि 24% रही जो कि एक रिकॉर्ड है. इसी प्रकार हमारे ऋण पोर्टफोलियो में वृद्धि की दर भी बेहतरीन रही है.

भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' पैकेज और हमारे मेहनतकश किसानों की बदौलत पिछले वर्ष कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 3.6% रही और अनुमान है कि वित्तीय वर्ष 2022 में भी वृद्धि की यह दर जारी रहेगी. वित्तीय वर्ष 2021 के दौरान बकाया कृषि ऋण में 12.3% की वृद्धि हुई जो सभी क्षेत्रों में सबसे अधिक थी. हमें विश्वास है कि इसी आधार पर हम केंद्रीय बजट 2022 में ग्रामीण ऋण प्रवाह के लिए निर्धारित ₹16.5 लाख करोड़ का लक्ष्य हासिल कर पाएंगे क्योंकि इस वर्ष भी मानसून सामान्य रहने का अनुमान है.

वित्तीय वर्ष 2021 के दौरान हमारे ऋण और अग्रिम पोर्टफोलियो में 25.2% की वृद्धि हुई जबकि उसके पिछले वर्ष इसमें 11.5% की वृद्धि हुई थी. उल्लेखनीय बात यह है कि ₹6 लाख करोड़ के कुल बकाया ऋण का आधा हिस्सा आधार स्तरीय उत्पादन गतिविधियों हेतु और एक तिहाई हिस्सा आधारभूत संरचना विकास के लिए संवितरित किया गया. सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सूक्ष्म वित्त संस्थाओं को ₹25,500 करोड़ की विशेष चलनिधि सुविधा और ₹1,567 करोड़ की अतिरिक्त विशेष चलनिधि सुविधा प्रदान की गई जिसकी वजह से किसानों को उनके मौसमी कृषि परिचालनों के लिए निर्बाध ऋण उपलब्ध हो सका. इसी दौरान हमारी दीर्घावधि ग्रामीण ऋण निधि से जो सहायता उपलब्ध कराई गई उससे कृषि क्षेत्र में पूंजी निर्माण के लिए सहायता मिली.

आधारभूत संरचना के क्षेत्र में नाबार्ड की प्रमुख भूमिका रही है जिसके तहत आरआईडीएफ़ की स्थापना से लेकर अब तक कृषि, सिंचाई, संपर्क (कनेक्टिविटी) और सामाजिक आधारभूत संरचनाओं की श्रेणी में 7.1 लाख परियोजनाओं (भारत निर्माण सहित) को मंजूरी दी जा चुकी है. देश की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के अभियान में भागीदारी करते हुए हमने 'राज्य सरकारों के लिए ग्रामीण आधारभूत संरचना सहायता (आरआईएएस)' नामक एक नई ऋण सुविधा शुरू की है. आरआईएएस का उद्देश्य देश के पूर्वी क्षेत्रों में ऐसी आधारभूत संरचनाओं का निर्माण करना है जिनसे आजीविका के अवसर बढ़ेंगे. ये राज्य भौतिक और सामाजिक आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में तो पिछड़े हैं ही, साथ ही उन्हें महामारी के बाद शहरों से गांवों में लौटे मजदूरों की ज़िम्मेदारी भी निभानी पड़ रही है. हमने फसल कटाई के बाद की गतिविधियों के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं के लिए सहायता देना जारी रखा. हमारी सहायक संस्था नैबकॉन्स ने देश भर में कृषि भंडारण आधारभूत सुविधाओं की जियो टैगिंग की प्रक्रिया पूरी की और मुझे विश्वास है कि इससे किसानों को एक कॉल करके ही भंडारण सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी.

कोविड महामारी के बाद के दौर में शहरों से गांवों में वापस लौटे मजदूरों की समस्याओं का समाधान करने तथा कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के प्रयोजन से नाबार्ड ने कई योजनाएं शुरू कीं जिनमें नाबार्ड से सहायता प्राप्त वाटरशेड और वाडी क्षेत्रों के लिए विशेष पुनर्वित्त योजनाएं, सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों के संवर्धन की योजना, और जल, स्वच्छता और आरोग्य (वॉश) योजना शामिल हैं. हमने मात्र 1% की प्रभावी ब्याज दर पर प्राथमिक कृषि ऋण समितियों के लिए कृषि आधारभूत संरचना योजना भी शुरू की है.

मेरा दृढ़ विश्वास है कि कृषि का भविष्य प्रौद्योगिकी के प्रयोग में ही निहित है और इसलिए हमने स्टार्टअप को बढ़ावा देने और कृषि व्यवसाय उद्भवन (इनक्यूबेशन) केन्द्रों के माध्यम से नवोन्मेषी वातावरण के निर्माण के अपने प्रयासों को और गति दी. हमने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय में मदुरै कृषि व्यवसाय उद्भवन केन्द्र का निधीयन किया है जो उत्पादों के परिष्कार, बाज़ार प्रमाणीकरण, व्यवसाय योजना की तैयारी के साथ-साथ नए उद्यमों को विधिक सहायता उपलब्ध करवाने की दिशा में भी कार्य कर रहा है.

हमारा सिद्धांत रहा है कि सुदृढ़ आधार स्तरीय संस्थाओं का निर्माण एक दीर्घकालिक सामाजिक निवेश है और पिछले वर्ष स्वयं सहायता समूहों और कृषक उत्पादक संगठनों ने कोविड महामारी के साथ लड़ाई में जिस तरह सक्रिय भूमिका निभाई उससे हमारा यह सिद्धांत सही साबित हुआ है. नाबार्ड ने एक करोड़ से अधिक स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय सहायता दी है और उन पर बकाया ऋण राशि ₹1.03 लाख करोड़ है. साथ ही, हमने 5,000 से अधिक कृषक उत्पादक संगठनों का गठन कर उनका मार्गदर्शन किया ताकि उनका क्षमता निर्माण हो और वो विकास की प्रक्रिया में शामिल हों, उसमें योगदान कर सकें और आगे बढ़ सकें. इसके अलावा, कृषक उत्पादक संगठनों को बैंकों से वित्तीय सहायता दिलवाने के लिए नाबार्ड की एक नई सहायक संस्था 'नैबसंरक्षण' के तहत एक ऋण गारंटी निधि की स्थापना की गई जिसकी समूह निधि ₹1,000 करोड़ है जिसमें नाबार्ड और भारत सरकार द्वारा बराबर का योगदान है. हमने जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं के समाधान के अपने प्रयास और तेज किए हैं. विभिन्न राष्ट्रीय और वैश्विक निधीयन व्यवस्थाओं के अंतर्गत मंजूर परियोजनाओं के लिए हम अब तक कुल ₹868.5 करोड़ का संवितरण कर चुके हैं.

नाबार्ड भारत सरकार (विशेष रूप से वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय), भारतीय रिज़र्व बैंक, बैंकिंग उद्योग के हमारे सहयोगियों, नागरिक सामाजिक संगठनों और अपने सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी अर्थात् किसानों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है.

मैं अंतरराष्ट्रीय समुदाय के प्रति भी कृतज्ञ हूं जिसने मुझे एशिया पैसिफिक रूरल एंड एग्रीकल्चरल क्रेडिट अशोसिएशन (अप्राका) का अध्यक्ष नियुक्त किया है. मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में अप्राका के माध्यम से एशिया प्रशांत क्षेत्र के देशों के बीच सहयोग बढ़ेगा जिसके सकारात्मक परिणाम होंगे तथा कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास होगा.

मैं यह संदेश ऐसे समय में लिख रहा हूं जब कोविड महामारी की दूसरी लहर कमजोर होती जा रही है, टीकाकारण अभियान तेज़ होता जा रहा है, किन्तु तीसरी लहर की छाया हमारे ऊपर मंडरा रही है. मगर इसके बावजूद मुझे दृढ़ विश्वास है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था गतिमान तथा ऊर्जावान रहेगी और कृषि क्षेत्र में नई जीवंतता आएगी. हमारी सम्मान्य संस्था ने हाल ही में अपना 40वां स्थापना दिवस मनाया है. मेरा निवेदन है कि आप नाबार्ड को आशीर्वाद दें ताकि वह अपनी उत्कृष्ट और प्रेरक विकास यात्रा पर आगे बढ़ सके. मैं ग्रेगरी एस. विलियम्स के इस प्रेरणास्पद उद्धरण के साथ अपनी कलम को विराम दूंगा:

"जब हम तूफान को पार कर लेंगे तो हमारे पास वो शक्ति भी होगी जो तूफान से जूझकर हमें हासिल होगी. चलिए, पाल चढ़ाइए और आगे बढ़िए."

डॉ.जी.आर.चिंतला
अध्यक्ष